पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 16.04.2022 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण व योग साधना शिविर

शनिवार 4 जून 2022 से
रविवार 12 जून 2022 तक
स्थान—गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार,
पौढ़ी गढ़वाल उत्तराखंड
इच्छुक शिविरार्थी सम्पर्क करें—
अनिल आर्य—9810117464

वर्ष-38 अंक-22 बैशाख-2079 दयानन्दाब्द 199 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2022 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.04.2022, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 385वां वेबिनार सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

मातृ पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, देश भक्त युवाओं का निर्माण करेंगे —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 3 अप्रैल 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक मुख्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती,पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली में सोल्लास संम्पन्न हुई। बैठक में निश्चय हुआ कि आगामी ग्रीष्मावकाश में युवा पीढ़ी को मातृ–पितृ भक्त,ईश्वर भक्त व देश भक्त निर्माण करने का अभियान चलाया जाएगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज चरित्रवान, संस्कारित,सुसंस्कृत युवाओं का निर्माण करना हमारी प्राथमिकता रहेगी । आज वृद्धआश्रम खुल रहे है यह चिंता का प्रश्न है कि नई पीढ़ी में माँ बाप की सेवा भावना में कमी आयी है । उन्होंने विशाल युवा चरित्र निर्माण शिविर वीर भरत की जन्म स्थली गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल में 4 जून से 12 जून 2022 तक आयोजित करने की घोषणा की । शिविर में 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के युवक लिए जायेगे उन्हें योगासन,दंड बैठक,लाठी,जुडो कराटे, बॉक्सिंग व आत्म रक्षा शिक्षण दिया जायेगा व वैदिक संस्कृति की जानकारी दी जायेगी। इसके साथ ही आचार्य अखिलेश्वर जी की अध्यक्षता में योगसाधना शिविर भी चलेगा। योगिराज विश्व पाल जयन्त योग व ध्यान करवायेगे। इसके साथ ही देश के विभिन्न स्थानों पर भी शिविर लगेंगे व युवा संस्कार अभियान चलाया जाएगा। बैठक का शुभारंभ आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ के साथ किया व नववर्ष के उपलक्ष्य में सभी को ओ३म् ध्वज वितरण किये गए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए गाजियाबाद से 50 युवक भेजने की घोषणा की। प्रमुखरूप से ओम सपरा,यज्ञ वीर चौहान,रामकुमार सिंह आर्य,महावीर सिंह आर्य,रीता जयहिंद,देवेन्द्र भगत,दिनेशसिंह आर्य,माधवसिंह आर्य,गौरव झा,सुनील खुराना, संतोष शास्त्री, प्रतिभा सपरा, राधाकांत शास्त्री, जितेंद्रसिंह आर्य, नेत्रपाल आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे।

आर्य समाज कोटद्वार में संवाददाता सम्मेलन सम्पन्न

सोमवार 14 मार्च 2022 राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि युवा पीढी को नशा मुक्त करके राष्ट्र को नशा मुक्त बनायेंगे योगीराज डॉ0 विश्वपाल जयन्त व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० अनिल आर्य जी ने बताया की आगामी ग्रीष्म कालीन अवकाश में युवको के चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। कण्वाश्रम के अतिरिक्त दिल्ली, फरीदाबाद ,पलवल, सोनीपत, करनाल, यमुनानगर, जीन्द, जम्मू, हजारीबाग, इन्दौर, बहरोड़ आदि 20 स्थानो पर भी शिविरों का आयोजन किया जाएगा। डॉ० अनिल आर्य जी ने बताया कि 6 से 12 कक्षाओं के छात्रों को लिया जाएगा। प्रातः 4.00 बजे से रात्रि 10 बजे तक योगासन , प्राणायाम ध्यान, दण्ड बैठक, लाठी, जूडो–कराटे, बाक्सिंग, स्तूप आदि आत्मरक्षा की शिक्षा दी जाएगी। साथ ही योगसाधना शिविर में बडे आयु के लोग भी भाग ले सकेगे। शिविर अध्यक्ष योगीराज डॉ० विश्वपाल जयन्त जी ने बताया कि यह नशा मुक्त समाज की स्थापना करेंगे जिस से वो अपने माता पिता की सेवा कर सकेगे। योगीराज जी ने बताया की गुरूकुल एक एतिहसिक स्थान है यह वीरभरत की जन्म भूमि है। आर्य समाज के सरक्षक आनन्द आर्य व मंत्री हिमांशु आर्य ने जनता से अपने बच्चों को शिविर में अवश्य भेजने की अपील की और उन्होने बताया की 5 जून 2022 को सुबह 10 बजे शिविर का उदघाटन होगा व 12 जून 2022 सुबह 10 बजे समापन होगा। जिसमें युवको को आर्शीवाद देने आप सभी आवश्य पहुंचे। महेश वर्मा, प्रवीण आर्या, धर्मपाल आर्य, अरूण आर्य, माधव सिंह व गौरव झा भी उपस्थित थे।

— हिमांशु आर्य मंत्री, आर्य समाज कोटद्वार

रामनवमी एवं आर्यसमाज–स्थापना–दिवस
सनातन वैदिक धर्मियों के दो महनीय पर्व

दिनांक 10 अप्रैल, 2022 को दो महनीय पर्व रामनवमी एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम वैदिक धर्म एवं संस्कृति के आदर्श महान् पुरुष, रक्षक एवं प्रहरी हैं। उनका जीवन सभी मनुष्यों व संसार के लिए प्रेरेक एवं अनुकरणीय है। वाल्मीकि रामायण के अनुरूप उनका जीवन सब मनुष्यों के अध्ययन करने एवं धारण करने योग्य है। रामचन्द्र जी ने अपने जीवन में वैदिक धर्म एवं संस्कृति को आत्मसात् कर उसका आचरण करते हुए उसे व्यवहारिक रूप दिया था। वैदिक धर्म एवं संस्कृति के सभी सिद्धान्तों को उन्होंने अपने कर्तव्यों एवं आचरणों में प्रशंसनीय रूप से स्थान दिया था। जब हम संसार के महापुरुषों का अध्ययन करते हैं तो हमें इतिहास में मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, ऋषि दयानन्द एवं इतर सभी ऋषि मुनियों के ज्ञान एवं तप से युक्त जीवनों के समान जीवन दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। अतः हमें संसार के सभी सत्पुरुषों को आदर व सम्मान करते हुए ज्ञान एवं गुणों के भण्डार अपने महान् पुरुषों श्री राम एवं श्री कृष्ण जी सहित ऋषि दयानन्द जी को भी उचित सम्मान, आदर देना चाहिये व उनमें निहित वेद प्रेरित गुणों को धारण करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना अपने समय में तेजी से विलुप्त हो रही सनातन वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए की थी। वह इस कार्य में सफल भी हुए। उन्होंने सनातन धर्म एवं संस्कृति के मूल ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान वेद की चार संहिताओं को खोज निकाला था। न केवल खोज निकाला था अपितु वेदों के सर्वसुलभ सरल वेदभाष्य का लेखन व प्रकाशन भी किया था। उन्होंने और उनके अनुगामी विद्वानों ने वेद के सत्य अर्थों अर्थात् वेदार्थों से जगत् को परिचित कराया है। उन्हीं की कृपा से आज हमें सत्य वेदार्थ प्राप्त हैं जिसका हम अध्ययन करने के साथ उसे अपने जीवनों में धारण किये हुए हैं व करने का प्रयत्न करते हैं। महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान यही है कि ऋषि दयानन्द ने विलुप्त वेदों को खोज कर प्राप्त किया और मनुष्य जगत का कल्याण करने वाले उनके सत्य अर्थों को जगत् को प्राप्त कराया। वेदज्ञान से ही मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति होती है। उसके लोक व परलोक दोनों सुधरते हैं। मनुष्य के जीवन सहित समाज, देश तथा विश्व में शान्ति स्थापित होती व हो सकती है। यदि वेद न होते तो हमें लोक परलोक तथा अपनी आत्मा के अनादित्व तथा नित्यत्व का ज्ञान कदापि न होता। हमें यह ज्ञात न होता कि हम अनादि, नित्य, अजर, अमर व अविनाशी हैं। न केवल इस सृष्टि व कल्प में अपितु इससे पूर्व की अनन्त सृष्टियों व कल्पों में भी हमारे मनुष्य आदि अनेकानेक योनियों में जन्म हुए हैं और भविष्य में भी होंगे जिनका आधार हमारे जीवन के कर्म होंगे। सब सत्य विद्याओं सहित ईश्वर–जीव–प्रकृति का व्यापक ज्ञान प्रदान करने से वेद विश्व की सर्वोपरि महान् धर्म एवं संस्कृति सिद्ध होते हैं। वेद व वैदिक साहित्य सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर संसार से अविद्या दूर हो सकती है और विश्व में सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है। वेद एवं इसकी सत्य मान्यताओं का प्रचार करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य है। जो मनुष्य ऐसा करेंगे उनका जन्म व परलोक दोनों सुधरेंगे वा उन्नत होंगे। हमारी आत्मा का मृत्यु के बाद पुनर्जन्म होना सुनिश्चित है। यह जन्म हमें संसार के स्वामी, रचयिता, पालक व प्रलयकर्ता परमात्मा से प्राप्त होना है। वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ एवं न्यायकारी है। वह हमारे कर्मों का पूरा पूरा न्याय करते हुए हमें जन्म देंगे। हमें वैदिक धर्म के इस सिद्धान्त को सभी पठित व विद्वत्जनों को समझाना चाहिये और उन्हें भी इसके प्रचार की प्रेरणा करनी चाहिये। इसी में सबका कल्याण व हित निहित है। इन विचारों से पूरी मानवता एवं प्राणी जगत का भी उपकार होगा। हमारा वर्तमान व पारलौकिक जीवन भी उन्नति को प्राप्त होंगे। हमें मोक्ष प्राप्त हो या न हो, हम पशु एवं पक्षी आदि नीच योनियों में जाने से तो बच ही सकते हैं। हमें वेद, दर्शन, उपनिषद एवं ऋषि दयानन्द के सत्यार्थपकाश आदि इतर सभी ग्रन्थों का स्वाध्याय कर वेद के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं को जानना और समझना चाहिये।

आर्यसमाज की स्थापना से वैदिक धर्म का पुनरुद्धार एवं रक्षा हुई है। यह कार्य सदा चलता रहना चाहिये। यदि इस कार्य में शिथिलता हुई तो इससे मानवता पर अनेक संकट आ सकते हैं। वेद प्रचार से ही मानव समाज श्रेष्ठ समाज बनेगा तथा कृण्वन्तों विश्मार्यम् से ही विश्व का कल्याण एवं उन्नति होगी।

हमें यह भी जानना है कि ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार का कार्य अपने गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा की प्रेरणा से किया था। इस कार्य को करते हुए उन्होंने अपने कुछ सहयोगियों एवं अनुयायियों के निवेदन पर आर्यसमाज की स्थापना मुम्बई में 10 अप्रैल सन् 1875 को की थी। आर्यसमाज ने ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करते हुए समाज को सृदण करने में सहायक कार्यों यथा अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वासों, पाखण्ड, कुरीतियां आदि दूर करने का महान कार्य किया है। आर्यसमाज ने ईश्वर की सच्ची स्तुति, प्रार्थना और उपासना को प्रचलित किया है। आर्यसमाज ने पर्यावरण को शुद्ध व पवित्र रखने सहित सब मनुष्य आदि प्राणियों को स्वस्थ रखने के लिए देवयज्ञ अग्निहोत्र भी प्रचलित किया जिसे अधिकांश आर्यसमाजी नियमित, सप्ताहिक व पाक्षिक रूप से करते हैं। माता–पिता का महत्व भी वैदिक साहित्य में पढ़ने को मिलता है। हमें माता–पिता का उनकी उचित आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन भर सहयोग व पालन करना है। इस परम्परा पर चल कर हमारी सन्तानें भी हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगी और उन सन्तानों की सन्तानें भी उनका रक्षण व पालन करेंगी। इस दृष्टि से पितृयज्ञ का विधान है जिसे सभी विवेकी पुरुष स्वीकार करते हैं और अपने परिवारों में माता–पिताओं की तन–मन–धन से सेवा भी करते हैं। विद्वान अतिथियों का सत्कार करना भी गृहस्थियों का कर्तव्य होता है। इसे अतिथि यज्ञ के नाम से जाना जाता है। विद्वानों का आदर, उनकी सेवा तथा घर पर आने पर उनकी सेवा व उनसे विनम्रतायुक्त व्यवहार करना भी धर्म का आवश्यक अंग है। इसको भी शास्त्रों के आधार पर आर्यसमाज ने ही प्रचलित व प्रचारित किया है। पशु–पक्षियों में भी हमारे समान आत्मा है। यह सभी पशु पक्षी किसी न किसी रूप में मनुष्य जीवन में सहयोग करने के लिए परमात्मा द्वारा बनाये गये हैं। गायों से हमें दुग्ध मिलता है। बैल हमारी खेती में हल चलाने व अन्य कार्यों में सहायक होते हैं। घोड़े हाथी भी उपयेागी हैं। उनका भी पोषण हमें करना चाहिये। सभी प्राणियों के प्रति हमारा पूर्ण अहिंसात्मक व्यवहार होना चाहिये। अदण्डनियों को दण्ड व पीड़ा देना मनुष्यों का कर्तव्य व कार्य नहीं है। किसी को भी किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के कारण कष्ट नहीं देना चाहिये। यह शिक्षा भी हमें बलिवैश्वदेव यज्ञ से मिलती है।

आर्यसमाज ने देश को स्वतन्त्र कराने सहित समाज से सभी प्रकार के अन्धविश्वासों और पाखण्डों को दूर करने का कार्य किया है व कर रहा है। आर्यसमाज ने समाज में सदियों से प्रचलित अनेकानेक कुरीतियों का उन्मूलन किया है। नारी शिक्षा सहित बच्चों की शिक्षा का आन्दोलन भी आर्यसमाज ने किया है तथा देश भर में गुरुकुल एवं विद्यालय खोले हैं जो आज भी संचालित हो रहे हैं। आर्यसमाज ने ही देश को सबसे अधिक वेदों सहित वैदिक धर्म एवं संस्कृति के पोषक विद्वान दिये हैं। आर्यसमाज स्थापना दिवस पर हमें आर्यसमाज के साहित्य सहित आर्यसमाज के इतिहास को पढ़ने का संकल्प लेना चाहिये। इससे हम आर्यसमाज के महत्व से परिचित हो सकेंगे। हम पायेंगे कि आर्यसमाज मानवमात्र वा प्राणीमात्र का कल्याण करने वाली संसार की एकमात्र अनूठी संस्था है। सबको आर्यसमाज के साथ सहयोग करना चाहिये और वैदिक विचारधारा को अपनाना चाहिये जो कि वस्तुतः सत्य, शिव एवं सुन्दर है। सबके लिए हितकारी एवं कल्याणकारी है। सबका पोषण करने वाली तथा दुःखों का निवारण करने वाली है। सब प्राणियों के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार करने की शिक्षा देती है। आर्यसमाज के स्थापना दिवस एवं रामनवमी पर्व की सभी बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई।

–मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला–2,
देहरादून–248001, फोनः09412985121

व्यास आश्रम हरिद्वार में अभिनन्दन

शनिवार 19 मार्च, 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में व्यास आश्रम, सप्त ऋषि मार्ग, हरिद्वार में परिषद् का प्रतिनिधि मंडल शिविर निमंत्रण देने पहुंचा। इस अवसर पर माता विमला गुप्ता, माता शान्ति देवी (92 वर्ष) का अभिनन्दन करते हुए अनिल आर्य, प्रवीण आर्या व आश्रम के प्रबन्धक श्री रमेश गुप्ता जी।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान
आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

'नव वर्ष पर आर्य समाज की चुनौतियां' पर गोष्ठी सम्पन्न

बढ़ता पाखण्ड, अंधविश्वास, गुरुडमवाद गंभीर प्रश्न चिन्ह –आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र

आर्य समाज ने हैदराबाद के निजाम को झुकाया था –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 1 अप्रैल 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में नववर्ष विक्रमी संवत 2079 व 148 वे आर्य समाज स्थापना दिवस पर 'नववर्ष पर आर्य समाज की चुनोतियाँ' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल मे 380 वा वेबिनार था। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानंद सरस्वती ने 7 अप्रैल 1875 को नवसंवत के दिन मुम्बई में की थी। वैदिक विद्वान आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने कहा कि इतनी किताबी शिक्षा के बाद भी समाज में बढ़ता पाखण्ड व अंधविश्वास चिंता का विषय है। लोग सत्य व तर्क की कसौटी पर निरीक्षण नहीं करते। गुरुडम बढ़ रहा है और कई गुरु जेल यात्रा भी कर रहे हैं। समाज में इन सबके प्रति जागृति लाना हर आर्य समाजी का कर्तव्य है सोचने समझने विचार करने की दिशा व दशा बदलनी होगी । सत्य कोई युग काल हो वह सत्य ही रहता है। बिल्ली रास्ता काट गई व विवाह के रास्ते में यदि नदी पड़ रही है तो यह कहना सेहरा नदी पार करने के बाद बंधेगा ऐसी अनेको बातों को दैनिक जीवन में हम देखते है जो संशय व भय पैदा करती है और लोग शिकार होते है। इन बातों से हमें बचना चाहिए। मुख्य अतिथि भाजपा नेता डॉ. विकास अग्रवाल ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती महान चिंतक थे उन्होंने तर्क की तलवार दी कि पहले सोचो फिर करो। उन्होंने कहा कि आर्य समाज समाज सुधार आंदोलन है,साथ ही यह राष्ट्र वाद की प्रेरणा देता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज का देश के स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक योगदान रहा और आर्य समाजियों के आंदोलन के कारण हैदराबाद के निजाम ने घुटने टेक दिए। आज हिन्दू समाज के सामने अनेक चुनोतियाँ है आर्य समाज हिन्दू समाज को संगठित कर उनका निराकरण करेगा और युवा पीढ़ी में राष्ट्रवाद की अलख जगायेंगे। कार्यक्रम अध्यक्ष सोहन लाल आर्य ने आजादी की लड़ाई में आर्य समाज के व क्रांतिकारी आंदोलन व योगदान की चर्चा की । राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने नववर्ष की सभी को बधाई देते हुए अपनी संस्कृति पर गर्व करने का आह्वान किया । हापुड़ से आनन्द प्रकाश आर्य ने भी शुभकामनाएं देते हुए स्वामी दयानंद को इतिहास पुरूष की संज्ञा दी। गायक रविन्द्र गुप्ता, पिंकी आर्या,बिंदु मदान, आशा आर्या,रचना वर्मा, ईश्वर देवी,जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, रजनी चुघ,सुशांता अरोड़ा, विमल चड्ढा, सुमित्रा गुप्ता आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किये।

'कर्म, अकर्म और विकर्म का मर्म' पर गोष्ठी सम्पन्न

कर्म करना मानव का प्रथम कर्त्तव्य है –आचार्य चंद्रशेखर शर्मा

पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है–अनिल आर्य

सोमवार 11 अप्रैल 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'कर्म, अकर्म, विकर्म का मर्म' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल में 384 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता आचार्य चंद्रशेखर शर्मा (ग्वालियर) ने कहा कि मानव जीवन कर्म प्रधान है।कर्म करना मानव का प्रथम कर्तव्य है।कर्म क्रिया का शुद्ध एवं दिव्य स्वरूप है।कर्म करना मानव का पूर्ण अधिकार है।कर्म के तीन भेद हैं– नित्य कर्म,नैमित्तिक कर्म, काम्य कर्म।हमारा प्रत्येक कर्म परिशुद्ध एवं परिमार्जित हो।जब कर्म उदात्तभाव,परमार्थभाव और परमकल्याणभाव से समाहित हो जाता है,तो ऐसा परोपकार से परिपूर्ण यज्ञीयकर्म बंधन से मुक्त करके मुक्ति मार्ग को प्रशस्त करता है।आचार्य जी ने अकर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि कर्म के विना जीवन में गति नहीं है।कुछ न करने का भाव स्वयं का अपमान है।खाना,पीना,जागना एवं सोना आदि सब क्रियाएँ कर्म है।इसलिए निर्लिप्त,निर्विकार एवं निरभिमान होकर कर्म करना ही कर्म में अकर्म है।विकर्म के दो भाव हैं,प्रथम– निंदनीय कर्म और शास्त्र प्रतिकूल कर्म विकर्म है। दूसरा– विशेष कर्म,विशुद्ध कर्म,विशिष्ट कर्म ही विकर्म है। भारत के महान आचार्यों ने इन तीनों शब्दों की विवेचना विस्तार से की है।जिज्ञासु साधक भगवद् गीता में इस विषय को स्वयं पढ़ें, समझें एवं आत्मसात् करें। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि पुरुषार्थ ही इस जीवन में सब कामना पूरी करता है मनचाहा फल उसने पाया जो आलसी बनकर पड़ा न रहा । अतः मनुष्य को सदैव कर्म करते रहना चाहिए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य व अध्यक्ष सुरेन्द्र बुद्धिराजा ने कहा कि वेद, गीता भी कर्म में लगे रहने का मनुष्य को संदेश देते हैं। गायक रविन्द्र गुप्ता,राजेश मेहंदीरत्ता, विजय खुल्लर,ईश्वर देवी,रजनी चुघ,सुमित्रा गुप्ता, कृष्णा पाहुजा,कौशल्या अरोड़ा, प्रवीना ठक्कर,कुसुम भंड़ारी, मिथिलेश गौड,विजय लक्ष्मी आर्या,शोभा बत्रा,उमा मिगलानी आदि के मधुर भजन हुए।

नववर्ष विक्रमी संवत की महत्ता पर गोष्ठी सम्पन्न

शुभ कार्य की काल गणना केवल भारतीय संस्कृति में ही है –योगाचार्य श्रुति सेतिया

हमें अपनी पुरातन संस्कृति पर गर्व होना चाहिये–अनिल आर्य

सोमवार 4 अप्रैल 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'नववर्ष विक्रमी संवत की महत्ता' पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 381 वां वेबिनार था। योगाचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि शुभ कार्य समय की काल गणना केवल भारतीय संस्कृति में ही विद्यमान है। संवत्सर अर्थात इस सृष्टि का पहला उषाकाल।समग्र जगत का प्रथम सूर्योदय। भारतीय के लिए गर्व का दिन है क्योंकि उसका प्रारंभ किसी ऋषि– मुनि, महात्मा आदि की जन्मतिथि आदि से नहीं है, बल्कि जिस क्षण सृष्टि शुरू हुई उसी समय से संवत्सर का प्रारंभ हो गया।पुरातन धर्म ग्रंथों के अनुसार चौत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि ही सृष्टि की जन्म तिथि है,इसलिए इसको सृष्टि का प्रथम दिवस भी कहते हैं।चौत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि विक्रम संवत का पहला दिन,प्रभु श्री राम का राज्याभिषेक,नवरात्र स्थापना का प्रथम दिवस,सिख परंपरा के द्वितीय गुरु गुरु अंगद देव जी का जन्म दिवस,आर्य समाज स्थापना दिवस,संत झूलेलाल दिवस,शालिवाहन संवत्सर का प्रारंभ दिवस,युगाब्द संवत्सर का प्रथम दिन है। वर्तमान भारत में जिस प्रकार से सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है उसके चलते हमारी परंपराओं पर भी गहरा आघात हुआ है। लेकिन आज भी समाज का हर वर्ग भारतीय कालगणना का ही सहारा लेता है।हमारे त्यौहार भी प्रकृति और गृह नक्षत्रों पर ही आधारित होते हैं,इसलिए कहा जा सकता है कि नववर्ष प्रतिपदा पूर्णता वैज्ञानिक और प्राकृतिक नववर्ष है।भारत की संस्कृति मानव जीवन को सुंदर और सुखमय बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है।वर्तमान में भले ही हम स्वतंत्र हो गए हो,लेकिन पराधीनता का काला साया एक आवरण की तरह हमारे सिर पर विद्यमान है जिसके चलते हम उस राह का अनुकरण करने की ओर प्रवृत्त हुए हैं जो हमारे संस्कार के साथ एकरस नहीं है। नववर्ष अंग्रेजी पद्धति से 1 जनवरी को माना जाने वाला वर्ष कहीं से नहीं लगता।इसके नाम पर किया जाने वाला मनोरंजन फूहड़ता के अलावा कुछ भी नहीं है। आधुनिकता के नाम पर समाज का अभिजात्य वर्ग यह सब कुछ कर रहा है। जो सभ्य और भारतीय समाज के लिए स्वीकार करने योग्य नहीं है। भारतीय काल गणना के अनुसार मनाए जाने वाले त्योहारों के पीछे कोई ना कोई प्रेरणा विद्यमान है। हम जानते हैं कि हिंदी के अंतिम मास फाल्गुन में वातावरण भी वर्ष समाप्ति का संदेश देता है। साथ ही नववर्ष के प्रथम दिन से ही वातावरण सुखद हो जाता है। हमारे ऋषि – मुनि कितने श्रेष्ठ होंगे,जिन्होंने ऐसी कालगणना विकसित की,जिसमें कल क्या होगा,

(शेष पृष्ठ 4 पर)

'श्रीराम भक्त कौन?' पर गोष्ठी सम्पन्न

श्रीराम के चरित्र को जीवन में अपनाये– डॉ. नरेन्द्र आहुजा विवेक

शुक्रवार 08 अप्रैल 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में रामनवमी के उपलक्ष्य में 'श्रीराम भक्त कौन?' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया.यह कोरोना काल में 383 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता हरियाणा के पूर्व राज्य औषधि नियन्त्रक एवं परिषद् हरियाणा के प्रभारी नरेन्द्र आहूजा विवेक ने कहा कि 'जिस विधि रहते राम ता विधि रहिए' मानने वाला ही राम भक्त होता है। हमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन आदर्शों मान्यताओं यज्ञ रक्षा और योग की जीवन पद्धति को अपनाना चाहिए।जैसे श्रीराम राजतिलक और वनगमन के समय समभाव रहे थे वैसे ही हमें भी जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में स्थितप्रज्ञ होकर समभाव रहना चाहिए।जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम प्राण जाएं पर वचन ना जाए पर चलते हुए कभी अपना वचन नहीं तोड़ते थे वैसे ही हमें भी कभी अपना वचन भंग नहीं करना चाहिए।हमें अपने मन मन्दिर में राम के आदर्शों को स्थापित कर अपने मन मंदिर में राम मंदिर की स्थापना करनी चाहिए।राम मंदिर ही राम राज्य की स्थापना की तरफ एक मील का पत्थर साबित होगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि श्री राम गुणों की खान थे उनका चरित्र उत्तम कोटि का था उसे आत्मसात करने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि तिहाड़ जेल के पूर्व ला ऑफिसर सुनील गुप्ता व अध्यक्ष वेद प्रकाश ने भी श्रीराम के चरित्र पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि आर्य समाज चित्र नहीं चरित्र की पूजा करता है। गायक रविन्द्र गुप्ता,पिंकी आर्या,दीप्ति सपरा,रचना वर्मा,ईश्वर देवी,कमला हंस, कमलेश चांदना,अंजू आहुजा, रेखा गौतम,राजश्री यादव, कौशल्या अरोड़ा,रजनी चुघ, सरला बजाज,कुसुम भंड़ारी, प्रवीना ठक्कर आदि के मधुर भजन हुए।

165 वें बलिदान दिवस पर मंगल पाण्डेय को दी श्रद्धांजलि

सर्वप्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी मंगल पाण्डेय ने ही जलाई थी–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 8 अप्रैल 2022,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम सेनानी मंगल पाण्डेय के 165 वें बलिदान दिवस पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के जनक प्रथम क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने 29 मार्च 1857 को कलकत्ता की बैरकपुर छावनी में क्रांति का बिगुल बजाया था। उन्होंने नारा बुलंद किया था ष्मारो फिरंगी कोष । अंग्रेज अधिकारियों पर गोली चलाने व हमला करने के कारण उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। उन्हें 18 अप्रैल 1857 को फांसी होनी थी पर कलकत्ता की बैरकपुर जेल के जल्लादों ने फांसी देने से इनकार कर दिया तब बाहर से जल्लादों को बुलाकर 10 दिन पहले ही 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी गई। इस तरह से मंगल पाण्डेय 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले बलिदानी वीर होने का इतिहास रच गये।आज उस महान क्रांतिकारी को स्मरण करते हुए देश की एकता अखंडता की रक्षा का संकल्प लेना है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि अनेको बेनाम क्रांतिकारियों के बलिदान के कारण हम आजादी की सांस ले रहे हैं उनमें से मंगल पाण्डेय सर्वोपरि है। आचार्य महेंद्र भाई ने कहा कि देश की स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास क्रांतिकारियों ने अपने रक्त से लिखा है उनके बलिदान को स्मरण रखने की आवश्यकता है। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने नई पीढ़ी से देश के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। गायक रविन्द्र गुप्ता,पिंकी आर्या, दीप्ति सपरा,आशा आर्या,रवीन्द्र गुप्ता,वीना वोहरा,मृदुल अग्रवाल, प्रवीना ठक्कर,नरेंद्र आर्य सुमन, प्रतिभा कटारिया आदि ने भी अपने विचार रखे।

'अस्थमा' पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

बदलते मौसम में एलर्जी से बचाव आवश्यक–डॉ. सुनील रहेजा (एम.एस, जी.बी.पंत अस्पताल)

बुधवार 6 अप्रैल 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'अस्थमा' पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 382 वां वेबिनार था। डॉ. सुनील रहेजा (एम एस,जी बी पंत अस्पताल) ने कहा कि मार्च–अप्रैल के बदलते मौसम में एलर्जी की समस्या अधिक रहती है। थोड़ी सी लापरवाही से एलर्जी परेशान कर देती है। किसी को धुंवे से,किसी को पैन्ट सेंट से,किसी को किसी खाने पीने की चीज से एलर्जी हो जाती है जिससे आपको एलर्जी होती है उस से बचाव व सावधानी आवश्यक है। इनहेलर का उपयोग भी लाभदायक रहेगा। एलर्जी ऐसी बीमारी है जो जीना ही खराब कर देती है। दैनिक डांस, योग व प्राणायाम करने से इम्युनिटी बढ़ जाती है हमें योग करना चाहिए। भाप व नमक के गर्म पानी से गरारे भी सस्ता सुलभ उपचार है जितना आप स्वयं का ध्यान रखेंगे आपका जीवन उतना ही सरल व सुगम होगा।यदि आपको जल्दी एलर्जी हो जाती है तो घर पर ही रहे बहुत आवश्यक हो तभी बाहर निकलें। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए इलाज से परहेज बेहतर है सावधानी हटी दुर्घटना घटी। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने योग द्वारा इम्यूनिटी बढ़ाने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि आर्य नेता लक्ष्मण पाहुजा व अध्यक्ष डॉ. अमित पाहुजा ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए जीवन मे अपनाने का आह्वान किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, सुमित्रा गुप्ता, आशा आर्या, दीप्ति सपरा, रजनी चुघ, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, विजय खुल्लर, सुनीता अरोड़ा,किरण सहगल, रविन्द्र गुप्ता, कुसुम भंडारी, कमला हंस आदि के मधुर भजन हुए।

(पृष्ठ 3 का शेष)

इस बात की पूरी जानकारी समाहित है। अंग्रेजी शिक्षा– दीक्षा ओर पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण आज भले ही सर्वत्र ईसवी संवत का बोलबाला हो, परन्तु वास्तविकता यह भी है कि देश के सांस्कृतिक पर्व उत्सव महापुरुषों की जन्म तिथि या आज भी भारत की काल गणना के हिसाब से बनाई जाती हैं। नववर्ष का अध्ययन किया जाए तो चारों तरफ नई उमंग की धारा प्रवाहित होते हुए दिखाई देती है। जहां प्रकृति अपने पुराने आवरण को उतार कर नए परिवेश में आने को आतुर दिखाई देती है। नववर्ष के प्रथम दिवस पूजा –पाठ करने से असीमित फल की प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि शुभ कार्य के लिए शुभ समय की आवश्यकता होती है और शुभ समय निकालने की विधा केवल भारतीय कालगणना में ही समाहित है। विक्रमादित्य ने भारत की तमाम काल गणना परक सांस्कृतिक परंपराओं को ध्यान में रखते हुए ही चौत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर को चलाने की परंपरा शुरू की थी। तभी से समूचा भारत इस तिथि का प्रतिवर्ष अभिनंदन करता है। ऐसे में विचारणीय तथ्य यह है कि हम जड़ों से जुड़े रहना चाहते हैं या फिर जड़ बनकर पश्चिम के पीछे भागना चाहते हैं।आज़ भी नहीं है चमक–दमक के प्रति बढ़ता आकर्षण भारतीयता से दूर कर रहा है,लेकिन यह भी एक सत्य है कि दुनिया के तमाम देशों के नागरिकों को भारतीयता रास आने लगी है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हमे पुरातन भारतीय संस्कृति पर गर्व करना चाहिए । मुख्य अतिथि राजेश मेहंदीरत्ता व अध्यक्ष उर्मिला आर्या(गुरुगांव) ने भी अपनी जड़ों से जुडने का आह्वान किया।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि भारतीय काल गणना पूर्णतया वैज्ञानिक है । गायक रविन्द्र गुप्ता,प्रवीना ठक्कर,कमलेश चांदना,आशा ढींगरा,दीप्ति सपरा,सुषमा बजाज,ईश्वर देवी,कमला हंस, रचना वर्मा,सुनीता अरोड़ा,आशा आर्या,राजश्री यादव,रजनी चुघ, पिंकी आर्या,रीता जयहिंद आदि के मधुर भजन हुए।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मा. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970